PAGE NO.
DATE: / /200

TOPIC – "Rostow's stages of economics Growth"
"रोस्टोव की आर्थिक विकास की अवस्थाएं"

Sub Topic – Meaning, the stage of traditional society, Pre take off, take off stage, Drive to Maturity, High Mass consumption, criticism and limits.

for – B A III (अर्थशास्त्र)
I Paper
TEXT

Prepared by – dr. Saraswati
Asst. Professor
Economics
Govt. college Bhojpur Moradabad
U.P. Mobile – 9319367216

Email – drsaraswati081@gmail.com

B.A III Year

By – Dr SARASWATI
Asst. PROFESSOR. Eco
Govt. college
Bhojpur (MBD)

रोस्टोव की आर्थिक विकास की अवस्थाएं

आर्थिक विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप वास्तविक राष्ट्रीय आय में क्रमिक वृद्धि होती है। वार्षिक दृष्टि से आर्थिक विकास को धनात्मक (Positive) ऋणात्मक (Negative) और शून्य (Zero) तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है अर्थात राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि होते रहने पर विकास को धनात्मक, राष्ट्रीय आय के स्थिर रहने पर विकास को शून्य तथा राष्ट्रीय आय में निरन्तर कमी रहने पर विकास को ऋणात्मक माना जायेगा।

(प्रो० नेरेरी) ने विकास के प्रगतिशील (Progressive) प्रतिगामी (Regressive) तथा स्थैतिक (Stationary) तीन स्वरूप माने हैं अर्थात जब राष्ट्रीय आय जनसंख्या की तुलना में तेजी से बढ़ती है तब इसे प्रगतिशील विकास कहा जाता है। राष्ट्रीय आय व जनसंख्या में समान दर से वृद्धि होने पर स्थैतिक विकास की अवस्था मानी जाती है जब राष्ट्रीय आय की अपेक्षा जनसंख्या तेजी से बढ़ती है तब प्रतिगामी विकास की अवस्था मानी जाती है।

विकासशील देशों को पूर्ण विकास की अवस्था प्राप्त करने के लिए अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। फेडरिक लिस्ट – Fredric List ने विकास की पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया है

1) आखेट अवस्था
2) चरागाह अवस्था
3) कृषि अवस्था
4) कृषि औद्योगिक अवस्था
5) औद्योगिक वाणिज्य अवस्था

Scanned by CamScanner

सी प्रकार हिल्डे ब्रान्ड —

वस्तु विनिमय अवस्था
) मुद्रा विनिमय अवस्था
) साख अवस्था

परन्तु विश्व के महत्वपूर्ण राष्ट्रों के विकास की अवस्थाओं के सन्दर्भ में प्रो० डब्ल्यू रोस्टोव का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है, उन्होंने ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि किन प्रवृत्तियों के अन्तर्गत कृषि प्रधान और परंपरागत समाज आधुनिकीकरण की सीढ़ी को प्रारम्भ करता है और किस प्रकार से तथा कहा नियमित विकास प्रत्येक समाज की स्थायी विशेषता हो जाती है।

अमेरिकी विचारक प्रो० डब्ल्यू रोस्टोव ने अपनी पुस्तक [The stage of Economic Growth] में विकास की प्रमुख पाँच अवस्थाओं का वर्णन किया है।

1) परम्परागत समाज की अवस्था
2) आत्म स्फूर्ति से पूर्व की अवस्था
3) आत्म स्फूर्ति की अवस्था
4) परिपक्वता की अवस्था
5) अत्यधिक उपयोग की अवस्था

1) The Stage of Traditional Society
2) The ~~Stage of~~ pre conditions to take off stage
3) The ~~Stage of~~ take off stage
4) Stage of Maturity
5) Stage of High mass Consumpion

1) परम्परागत समाज की अवस्था —

प्रो० रोस्टोव "

परम्परागत समाज से आशय एक ऐसे समाज से है जिसका ढाँचा सीमित उत्पादन कार्यों के अन्तर्गत न्यूटन के पूर्व के विज्ञान प्रविधि एवं भौतिक विश्व की न्यूटन के पूर्व की स्थिति के आधार पर विकसित हुआ।" आधुनिक काल में यह अवस्था आर्थिक पिछड़ेपन की सूचक है।

विशेषताएँ —

1) कृषि — प्रमुख व्यवसाय लेकिन कृषि की रीतियां अत्यन्त प्राचीन व रूढ़िवादी
2) उद्योग — पिछड़ी अवस्था में, शक्ति चालित यन्त्रों का अभाव
3) पूँजी विनियोग — पूँजी विनियोग की मात्रा कुल राष्ट्रीय आय के 5% से भी कम होती है
4) राजनीतिक सत्ता — भूमिपतियों, जमींदारों के हाथों में
5) समाज का स्वरूप — समाज अत्यंत पिछड़ी अवस्था में तथा अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का प्रचलन
6) अन्य विशेषताएं (A) जन्म दर व मृत्युदर अधिक
B) राज्य की आर्थिक क्रियाएं अत्यन्त सीमित

निष्कर्ष परम्परागत समाज स्थैतिक समाज नहीं होता बल्कि उत्पादन स्तर, व्यापार के परिणाम, जनसंख्या तथा आय में परिवर्तन लाने की पर्याप्त संभावनाएं उपस्थित होती हैं।

2) आत्म स्फूर्ति से पूर्व की अवस्था

विकास की इस दूसरी अवस्था का तात्पर्य एक ऐसे समाज से है जिसमें परिवर्तन होने प्रारम्भ हो गए हैं अर्थात वह समाज की प्रथम आर्थिक अवस्था (परम्परागत समाज) से दूसरी अवस्था की ओर अग्रसर हो रहा हो। अतः कहा जा सकता है कि यह अवस्था प्रगति की एक ऐसी अवस्था है जिसमें विकास के आवश्यक घटक जैसे- श्रम पूँजी व कच्चे माल एकत्र किए जाते हैं और तकनीकी ज्ञान को विकसित किया जाता है।

प्रो० रोस्टोव - यह अवस्था पश्चिमी यूरोप में 17वीं शताब्दी के अन्त्य व 18वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में प्रारम्भ हुई। इस अवस्था में विनियोग व राष्ट्रीय आय की दर 5- से 10% तक होती है।

प्रो० रोस्टोव "लोगों में यह विचार फैलने लगता है कि आर्थिक विकास सम्भव है और किसी भी अन्य लक्ष्य चाहे वह राष्ट्रीय सम्मान हो, निजी लाभ सामान्य कल्याण, का प्रश्न हो या फिर बच्चों के सुरक्षित भविष्य का उद्देश्य हो, के लिए एक आवश्यक शर्त है"

विशेषताएं -

1) कृषि - कृषि को बढ़ावा मिलता है।

2) उद्योग → उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है।

3) विदेशी व्यापार - विदेशी व्यापार से अर्थव्यवस्था के लाभ होता है।

4) विदेशी पूँजी - विदेशी व्यापार ~~बढ़ने~~ के कारण विदेशी पूँजी को भी प्रोत्साहन मिलता है।

5) बैंकिंग परिवहन व शिक्षा - विदेशी पूँजी से अर्थव्यवस्था में बैंकिंग, परिवहन, शिक्षा को बढ़ावा मिलता है

6) समाज का स्वरूप - समाज का स्वरूप परिवर्तन होता है अर्थात शिक्षा व बैंकिंग बढ़ने के कारण।

7) राजनीतिक सत्ता - में बढ़ोत्तरी होती है।

रोस्टोव के — कोई भी देश इस अवस्था में 1000 वर्ष तक रह सकता है।

3) आत्म स्फूर्ति की अवस्था -

यह आर्थिक विकास की तीसरी अवस्था है। प्रो० रोस्टोव

"आत्म स्फूर्ति एक ऐसी अवस्था है जिसमें विनियोग की दर बढ़ती है और प्रति व्यक्ति वास्तविक उत्पादन में वृद्धि हो जाती है इस प्रारम्भिक परिवर्तन से उत्पादन तकनीक में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ जाते हैं और आय का प्रवाह इस प्रकार होने लगता है कि विनियोग द्वारा प्रति व्यक्ति उत्पादन की प्रवृति बढ़ती है।"

किण्डलबर्जर -

"यह उन्नति एक ऐसी अवस्था है जिसमें विकास की बाधाएं हट जाती हैं विकास की दर

-बढ़ती ब्याज (नियम) के अनुसार बढ़ाने के लिए निवेश की दर 5% से बढ़कर 10% तथा इससे भी अधिक हो जाती है। .... अर्थव्यवस्था कुछ मामलों में आत्म निर्भर हो जाती है।"

रोस्टोव — "आत्म स्फूर्ति को एक ऐसी औद्योगिक क्रान्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है जो उत्पादन की पद्धतियों में आमूल परिवर्तनों जिसका अपेक्षाकृत कम समय में निर्णायक प्रभाव पड़ता है, से सम्बन्धित है।

आत्म स्फूर्ति शब्द विमान (जहाज) से लिया गया है।

जमीन पर खड़ा रहना - परम्परागत समाज

जमीन से आगे की ओर बढ़ना - आत्म स्फूर्ति से पहले की अवस्था

आसमान में उड़ना - आत्म स्फूर्ति की अवस्था

प्रमुख देशों का आत्मस्फूर्ति काल

देश का नाम	आत्म स्फूर्ति काल
ग्रेट ब्रिटेन	1778 - 1802
फ्रांस	1830 - 1860
अमेरिका	1843 - 1860
जर्मनी	1850 - 1873
स्वीडन	1868 - 1890
भारत	1952
चीन	1952

विशेषताएं — (1) अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर

2) निर्धनता के कुचक्र को तोड़ा जाता है

3) कृषि जनसंख्या का प्रतिशत घटकर 40% हो जाता है

4) विनियोग की दर कुल 10% या इससे भी अधिक हो जाती है। जिससे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो जाती है।

5) नागरिकों के मन में राष्ट्रीयता की भावना जागती है।

6) उद्योगों का विकास तीव्र गति से प्रारम्भ होता है।

आवश्यक शर्तें

1) उत्पादक विनियोग की दर में राष्ट्रीय आय के 10% अंक तक वृद्धि → राष्ट्रीय आय का लगभग 5 से 10 प्रतिशत या इससे अधिक विनियोजित होना चाहिए। कृषि उत्पादकता में वृद्धि होनी चाहिए। ताकि बढ़ती हुई सामान्य तथा शहरी जनसंख्या को आवश्यक खाद्य पूर्ति प्राप्त हो। सं.) यातायात एवं सामाजिक सेवाओं के विकास पर कुल विनियोग का काफी बड़ा भाग व्यय होना चाहिए। अर्थात् सामाजिक उपरि व्यय पूंजी का निर्माण होना चाहिए।

2) प्रमुख क्षेत्रों का विकास

1) - प्राथमिक विकास क्षेत्र — प्राथमिक क्षेत्र में वे उन उद्योगों के विकास से है जिनमें नई तकनीकी के प्रयोग की अधिक सम्भावनाएं होती हैं तथा विकास की ऊँची दर प्राप्त की जा सकती है। इन्हें प्राथमिक (प्रारम्भिक) विकास क्षेत्र कहते हैं। इसी के साथ उन क्षेत्रों का विकास होना चाहिए जिनके विकास की तीव्र गति प्राथमिक क्षेत्र विकास पर निर्भर करती है वो है (पूरक विकास क्षेत्र)

परिपक्वता की स्थिति वाले देश

देश	तिथियां
अमेरिका	1900
ब्रिटेन	1910
फ्रांस	1910
जर्मनी	1930
जापान	1940
रूस	1950
कनाडा	1960

5) विशाल उपभोग की अवस्था –
रोस्टोव के अनुसार
इस अवस्था में मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति से ↓ ऊपर उठ कर समाज माँग की ओर,
उत्पादन की आवश्यकताओं से उपभोग की वस्तुओं की ओर तथा विकास क्रम में अवस्था की ओर परिवर्तित हो जाता है।
इस अवस्था में समाज का सामान्य उपभोग स्तर उच्चतर स्थिति पर आ चुका है तथा समाज का ध्यान पोषण, वस्त्र, आवास, तथा अन्य वस्तुओं के उपभोग में अत्यधिक आर्थिक आधार पर जाता है। समाज का ध्यान भी उत्पादन की अपेक्षा उपभोग पर केंद्रित हो जाता है और नागरिक कल्याण की नीतियाँ अपनाई जाती हैं।

विशेषताएं –
1) उपभोग का स्तर उच्चतर
2) औद्योगिक जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि
3) टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं – कार, फ्रिज, इलेक्ट्रॉनिक्स सामान इत्यादि का उपयोग बढ़ने पर
4) देश में पूर्ण रोजगार की स्थिति
5) यह विकास की चरम अवस्था है।

देश	तिथियां
अमेरिका	1920
ग्रेट ब्रिटेन	1930
जापान	1950
रूस	1953-55

विकास की अवस्थाओं का रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण

1) आर्थिक विकास का कार्य पहले बहुत धीरे-धीरे होता है
2) धीरे-धीरे विकास की गति तेज होती जाती है और एक निश्चित सीमा पर आकर विकास पथ शिथिल हो जाता है।
3) यह कहना कठिन है कि एक अवस्था कितनी देर तक चलती है और 'S' बिन्दु पर पहुँचने के बाद कौन सी नयी शक्ति किस ओर नया मोड़ देगी।

प्रो० किण्डल बर्गर - "प्रो० रोस्टोव की विकास प्रक्रिया (S) रूप में मनुष्य के शरीर के विकास की भाँति (1) शिशु से बालक (2) बालक से किशोर (3) किशोर युवा (यौवन अवस्था - रोस्टोव के अनुसार अर्थव्यवस्था की उत्कर्ष अथवा आत्म स्फूर्ति अवस्था) (4) युवा से प्रौढ़ (5) प्रौढ़ से वृद्ध।
वास्तव में उक्त पाँचों अवस्थाएं अर्थव्यवस्था की विकास अवस्थाओं से काफी मेल खाती हैं।

आलोचनाएं या सीमाएं →

यद्यपि रोस्टोव ने आर्थिक विकास की अवस्थाओं का विश्लेषण बड़े ही वर्णपूर्ण एवं क्रमबद्ध ढंग से किया है किन्तु अनेक विद्वानों ने उनके विश्लेषण को दोषपूर्ण माना है।

प्रो० मेयर (Meier) "यह आवश्यक नहीं है कि विकास की प्रक्रिया में प्रत्येक देश को इन अवस्थाओं से गुजरना पड़े, विकास की पाँचवीं अवस्था (जिसको रोस्टोव अनिवार्य तथा अन्तिम मानते हैं) तक पहुँचना प्रत्येक देश के लिए सम्भव नहीं है।"

प्रो० एलेक्जेण्डर "यद्यपि एक देश भिन्न-2 आर्थिक अवस्थाओं से गुजरता है परन्तु रोस्टोव की योजनानुसार नहीं।"

केरनक्रॉस - "रोस्टोव का यह मत सर्वथा गलत है कि एक बार परिपक्वता की अवस्था आ जाने पर देश का विकास अपने आप होता रहता है।

1) प्रत्येक देश को विकास की पाँच अवस्थाओं से गुजरना आवश्यक या सम्भव नहीं - "यह आवश्यक नहीं है कि विकास की प्रक्रिया में प्रत्येक देश को इन पाँचों अवस्थाओं से गुजरना पड़े। विकास की पाँचवीं अवस्था (जिसको रोस्टोव अनिवार्य तथा अन्तिम मानते हैं) तक

Scanned by CamScanner

PAGE NO.
DATE : / /200

प्रो० कुजनेट्स

" उनके प्रयास अपेक्षाकृत अधिक वास्तविक थे। उनका दृष्टिकोण अपने पूर्ववर्ती अर्थशास्त्रियों की अपेक्षा अधिक विश्लेषणात्मक एवं विस्तृत विषयों से अलग है।

" यद्यपि उनकी अवस्थाओं में कहीं-कहीं भ्रम व दोबारगी के अंकुर अवश्य नजर आते हैं तथापि उनका दृष्टिकोण आर्थिक विकास की प्रक्रिया को समझाने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकता है। "

Key words – Savagery, pastoral life, agricultural stage, manufacturing stage, manufacturing-commerial stage

Notes – 1) आर्थिक विकास एवं नियोजन – एस० पी० सिंह

2) भारतीय अर्थव्यवस्था – एस० एन० जोशी

3) भारत की आर्थिक समस्याएं – डॉ० एन० जैन

Declaration – " I have by declare that the information giving in this form is true and correct to the best knowledge and belief. "

Scanned by CamScanner